।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ पव्रास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़

दूरभाष : 01565–224600,224900
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

वास्तविक सुख की खोज करें – आचार्य महाप्रज्ञ

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 17 मार्च : आचार्य महाप्रज्ञ ने संबोधित ग्रंथ के प्रथम अध्याय में भगवान महावीर और मुनि मेघकुमार के संवाद पर प्रवचन करते हएु कहा कि कोई भी समझदार आदमी सुख को छोड़ता नहीं है। हम जिसे सुख मानते हैं वह वास्तव में सुख नहीं होता है। पदार्थों से मिलने वाले सुख के परिणाम पर दृष्टिपात करते हैं तो वह हमें दुःख पैदा करने वाला लगता है। जब इसका ज्ञान हो जाता है तो व्यक्ति पदार्थों के सुख को छोड़कर वास्तिवक सुख की खोज करता है और कष्ट के मार्ग को अपनाता है। उन्होने कहा कि आदमी जब पदार्थो के सुखों में आसक्त हो जाता है तो समस्या पैदा हो जाती है। वह उसको प्राप्त करने के लिए अपने कर्तव्य को भूल जाता है। विद्यार्थीं का कर्तव्य अध्ययन करना है, परन्तु वह टीवी को देखने और सुनने में आसक्त हो जाता है, घंटों–घंटों उसमें ही लगा रहता है तो वह अपने कर्तव्य से च्यूत हो जाता है। जब आसक्ति होती है तो कर्तव्य का बोध नहीं रहता। इस आसक्ति से बचने के लिए कष्ट को सहन करना जरूरी होता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जिस तरह से एक सैनिक को देश की रक्षा करने के लिए कष्टों को सहन करना होता है वैसे ही आत्मा की सुरक्षा करने के लिए भी कष्टों को सहन करना जरूरी है और इन्द्रियों से परे जाने की जरूरत है। उन्होने कहा कि जो व्यक्ति हमेशा भोग विलास में रहता हो उसकी कभी धर्म रूचि नही हो सकती। धर्म में रूचि उसकी होगी जो कष्ट को सहन करना जानता है। त्याग करना जानता है। महाराणा प्रताप सुख में आसक्त होते तो वे जंगल की खाक नहीं छानते और न ही घास की रोटियां खाते। उनको पदार्थों के सुख से भी बड़ा आजादी का सुख लगा। इसलिए उन्होंने कष्ट को सहन किया। इससे पूर्व युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और उत्तराध्ययन पर तलुनात्मक प्रवचन किया।

नवरात्रा पर महामंत्र की विशेष आराधना

आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य एंव मुनि किशनलाल के निर्देशन में तेरापंथ महिलामंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा नवरात्र के अवसर पर नमस्कार महामंत्र एवं नव पद पर आराधना अनुष्ठान, मंगलवार रात्रि में प्रारंभ हुआ। मुनि किशनलाल ने कहा कि नमस्कार महामंत्र की आराधना में संयम और तप का योग होना अत्यन्त आवश्यक है। नो दिनों तक आयंबिल करना सबसे उत्तम है। उन्होंने बताया कि यह अनुष्ठान 24 मार्च तक रोजना रात्रि को 8 से 9 बजे तक चलेगा।

आचार्य महाप्रज्ञ का 28 को होगा विहार

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण अपने धर्मसंघ के साथ 28 मार्च को सायं श्रीडूँगरगढ़ से विहार करेंगे। आचार्य महाप्रज्ञ पीछले वर्ष को दिसंबर महिने से कस्बे में धर्म की गंगा बहा रहे है। उन्होंने इस दौरान तेरापंथ के विराट मर्यादा महोत्सव का आयोजन कर कस्बे का नाम विश्व पटल पर अंकित किया है।

क्रमशः.....2

अब आचार्य महाप्रज्ञ 28 मार्च को महावीर जयंती कार्यक्रम को संबोधित करने के बाद सायं मोमासर के लिए विहार करेगें। मुनि जयंतकुमार ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ 28 को रात्रि विश्राम नानू देवी चारक स्कूल में करेगें। 29 को प्रातः 7 बजे विहार कर तौलियासर पधारेंगे। जहां आयोजित होने वाले आचार्य तुलसी सम्मान समारोह में सान्निध्य प्रदान करेंगे। इस समारोह में गुजरात की राज्यपाल श्रीमति कमला भी उपस्थित रहेगी। तोलियासर से 29 को ही सायं विहार कर ठुकरियासर पधारेंगे। 30 को वहां से विहार कर आड़सर में दो दिन प्रवास करेगें। वहां से 1 अप्रेल को विहार कर मोमासर पधारेंगे। जहां 21 दिन तक प्रवास होगा और इस प्रवास में अनेकों विराट स्तर पर कार्यक्रम होंगे। आचार्य महाप्रज्ञ आगामी चातुर्मास सरदारशहर में करेंगे। इससे पूर्व सरदारशहर में ही अक्षय तृतीया महोत्सव भी आयोजित होगा।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक